ख्क्क का चातुर्मास होगा लाडनूं में

अतुल्य है लाडनूं की धरा : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं क्त्र नव बर।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने मंगल ाावना समारोह के अवसर पर सरदारशहर का चतुर्मास के पश्चचात ख्क्क का चातुर्मास लाडनूं में करने की घोषणा की। इस घोषणा के साथ ही जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जन समुदाय ने खड़े होकर ओम अर्हम की हर्ष ध्वनी के साथ अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने द्गड्डउपस्थित धर्म सभा को संबोधित करते हुए अपने प्रवचन में कहा कि सामाजिक जीवन में मूल्यांकन होना आवश्यक है उन्होंने लाडनूं को तेरापंथ का श्रेष्ठ क्षेत्र बताते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा का महŠव है जयाचार्य ने एक व्यवस्था की वृद्ध सेवा केन्द्र की। जिसके अंतर्गत सर्वप्रथम लाडनूं सेवा केन्द्र बना। मर्यादा महोत्सव के समय चाकरी की घोषणा में भी लाडनूं सेवाकेन्द्र की घोषणा सबसे पहले होती है।

तेरापंथ धर्मसंघ पनप रहा है साध्वियों और समणियों की वृद्धि होती है तो वह पारमार्थिक शिक्षण संस्था से ही होती है वर्तमान में लगभग म्त्त साध्वियां तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा कर रही है वह सब पारमार्थिक शिक्षण संस्था की ही देन है जो लाडनूं में अवस्थित है। लाडनूं इस रूप से अतुल्य है।

उन्होंने तेरापंथ की जड़ लाडनूं को बताते हुए कहा कि आज समणियां देश-विदेश में बहुत काम कर रही है, विदेशों में मियामी युनिवर्सिटी में बिना किसी वेतन के समणियां पढा रही है सबको आश्चर्य होता है, समण श्रेणी का मु य केन्द्र लाडनूं ही है। जैन विद्या की पहली संस्था जैन विश्व भारती है जैनों का पहला विश्वविद्यालय का गौरव भी लाडनूं को प्राप्त है, साथ ही ग्रंथागार है अनेक महŠवपूर्ण ग्रंथ है यहां जो कार्य हुआ वह छह महीनों में दो साल जितना कार्य हुआ है, उन्होंने कहा इस यथार्थ को समझना आवश्यक है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि लाडनूं की व्यवस्था भी सब दृष्टियों से अच्छी रही, उन्होंने यह भी कहा कि तेरापंथ जैसा विनीत और सेवा करने वाला श्रावक समाज मिलना भी दुर्लभ है।

इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती की व्यवस्थाएं, श्रावक समाज की श्रद्धा भावना एवं सेवार्थियों की सुचारू आवास व्यवस्था को मध्यनजर रखते हुए वर्ष ख्क्क का चातुर्मास लाडनूं करने की घोषणा की। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि और जगह चातुर्मास करने से पूर्व वहां चातुर्मास हेतु पूर्व तैयारियों में लंबा समय लगता है लेकिन लाडनूं में जैन विश्व भारती में यह व्यवस्थाएं सदैव बनी रहती है। अभी वर्तमान में चातुर्मास करने के पश्चात ख्क्क के चातुर्मास में यहां कार्यकर्ताओं को विश्राम मिलेगा जिसके पश्चात ख्क्क चातुर्मास पुनः लाडनूं में आयोजित होगा।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य प्रवर ने प्रवास का मु य केन्द्र जैन विश्व भारती लाडनूं को चुना पूरा स्थिरवास मंजूर नहीं हो रहा है। जैन विश्व भारती में लगभग सात महीनों का प्रवास हुआ जिसमें दो वर्षों के समान कार्य हुआ है जैन विश्व भारती का प्रवास विशेष लगता है €योंकि यहां की व्यवस्थाएं कार्य की दृष्टि से अनुकूल है। जैन विश्व भारती को छोड़कर जाना स्वर्ग त्याग के समान है। उम्र का एक पड़ाव ऐसा भी है जिसमें यात्रा संभव नहीं होती आचार्यप्रवर स्थिरवास करे लेकिन साधु जीवन में यात्रा का अलग महžव है। आचार्यवर की –˙ वर्ष की आयु हो चुकी है लेकिन मन अब भी स्थिरवास का नहीं बना है इसलिए लंबी यात्रा को छोड़कर छोटी यात्राएं जारी रहेगी।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि शŽद रूप से व्यक्ति लाभान्वित होता है ऐसा माना जाता है कि पारस का स्पर्श पाकर लोहा भी सोना बन जाता है वैसे ही गुरुचरणों में रहकर यहां के लोगों का जीवन भी धन्य हुआ है। उन्होंने कहा कि लाडनूं में मानव निर्माण के क्षेत्र में जो कार्य वर्तमान में हो रहा है उसे और अधिक गति देने एवं उस क्षेत्र में विकास की दृष्टि से गुरुकृपा लंबे समय तक मिले तो यह सरलतम रूप से संभव हो सकता है।

मु य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि इस छोटे से प्रवास के दौरान जैन विश्व भारती में अनेकों कार्य स पन्न हुए हैं जैविभा विश्वविद्यालय के लिए भी यह प्रवास कारगर सिद्ध हुआ, लाडनूं में बहुत कार्य हो रहा है इसलिए यहां आचार्यवर का लंबा प्रवास अपेक्षित है।

मंगल भावना समारोह स पन्न

लाडनूं क्ष्त्र नव बर।

जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में मंगलवार को मंगल भावना समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें जैविभा विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगल प्रज्ञा ने कहा कि यह परिसर व्यासपीठ है जिसमें अनेकों लोगों ने आचार्य तुलसी आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में ज्ञान को आत्मसात किया, आपके यहां से विहार करने के पश्चात हमें रिक्तता का अनुभव होगा। इस अनुभव की अनुभूति कभी आपको नहीं होती €योंकि जहां आप विराजित रहते हैं वहां की छवि ही निराली होती है।

चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के मु य संयोजक शार्दूलसिंह भूतोड़िया ने आभार व्यक्त करते हुए चातुर्मास में सहयोगी रहे समस्त कार्यकर्ताओं को चातुर्मास की सफलता के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने आचार्य प्रवर के लिए मंगल भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आपका लाडनूं प्रवास यहां के रहवासियों के लिए एक सुखद अनुभव रहा वहीं सेवार्थियों के लिए यह एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। आपका सामीप्य हमें आगे भी मिलता रहेगा ऐसी हमारी कामना है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया ने श्रावक समाज व जैन विश्व भारती की तरफ से मंगल भावना व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य प्रवर के लगभग साढे छह माह लाडनूं प्रवास के दौरान अनेक प्रवृतियों को बल मिला, अनेक शिविर आयोजित हुए, साहित्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं जो आगे भी निरंतर बढता रहेगा। आपके प्रवास में अनेक मंत्रियों संस्थाओं के पदाधिकारियों का यहां आना हुआ, जैन विश्व भारती और जैविभा विश्वविद्यालय की दृष्टि से भी महžवपूर्ण कार्य हुए हैं।

जैन श्वेता बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष कमलसिंह बैद ने कहा कि सकल जैन समाज लाडनूं को कृतार्थ करने के पश्चात आचार्य महाप्रज्ञ का लाडनूं से विहार करना यहां के लोगों के लिए एक मार्मिक अनुभव रहेगा। स ी को पूज्यवर का पुन: सान्निध्य शीघ्र मिले ऐसी सभी की कामना रहेगी।

अणुव्रत समिति के महामंत्री डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने आगमन के क्षणों को याद करते हुए विहार के अनुभवों को प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर प्रवास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष राकेश कठोतिया, मंत्री बच्छराज नाहटा रणजीतसिंह बैद, रणजीतसिंह कोठारी, प्रकाश बैद, स्थानी तेयपु मंत्री राजेश बोहरा, तेरापंथ कन्या मण्डल की सहसंयोजिका प्रिया गुनेचा, स्थानीय थानाप्रभारी धर्मवीर जानु ने अपनी मंगल भावना व्यक्त की तथा स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल ने गीत के द्वारा अपनी मंगल भावना व्यक्त की। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को भी प्रतिक चिन्ह भेंट कर स मान किया गया।